इकाई 33 स्थापत्य

इकाई की रूपरेखा

33.0 उद्देश्य

1526 ई. में भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना (खंड 2) से भारतीय-इस्लामी स्थापत्य को एक नया स्वरूप और जीवन प्राप्त हुआ। नये शासकों ने प्रचलित स्थापत्यगत प्रकारों और तकनीकों के साथ मध्य-एशिया और ईरान की तकनीकों का सुंदर सम्मिश्रण प्रस्तुत किया। इस प्रकार के प्रयत्नों के परिणामस्वरूप भारत में कई भव्य भवनों का निर्माण हुआ।

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- मुगल स्थापत्य के नये संरचनात्मक स्वरूपों और तकनीकों को समझ सकेंगे;
- इस काल की प्रमुख इमारतों का विस्तृत विवरण प्राप्त कर सकेंगे; तथा
- इस काल के अंतिम चरण में मुगल स्थापत्य में आ रहे ह्रास को पहचान सकेंगे।

33.1 प्रस्तावना

मुगल शासक सौंदर्य के उपासक और कला तथा संस्कृति के संरक्षक थे। उन्होंने भारत में कई सुंदर भवनों और नगरों का निर्माण करवाया। भारत में तेरहवीं शताब्दी में ही स्थापत्य की नवीन शैली की नींव रखी जा चुकी थी। इसमें मेहराबों का उपयोग किया जाता था और इसकी सहायता से गुम्बदों और प्रवेश द्वार का निर्माण किया जाता था। मुगलों ने यह परम्परा जारी रखी और पूर्व-तुर्क तकनीक अर्थात् मेहराब का शहतीर के साथ सम्मिश्रण प्रस्तुत किया। इन सबके मिले-जुले रूप के कारण अपने आप में एक नये प्रकार की शैली विकसित हुई।

स्थापत्यगत विकास के लिए बाबर के पास पर्याप्त समय नहीं था। इसके बावजूद उसने अपने सांस्कृतिक क्षेत्र की पद्धति पर भारत में अनेक बगीचों का निर्माण करवाया। अपने

संस्मरण (**बाबरनामा**) में उसने अपने द्वारा निर्मित कुछ मंडपों की भी चर्चा की है। दुर्भाग्यवश उसके द्वारा निर्मित बहुत कम भवन आज बचे हुए हैं।

बाबर का उत्तराधिकारी हुमायूँ कभी भी दृढ़ता से अपना राजनैतिक प्राधिकार स्थापित न कर सका। सत्ता प्राप्त होने के एक वर्ष के अंदर उसे पदच्युत कर दिया गया और उसे देश छोड़कर ईरान जाना पड़ा। अतः इस काल में बनी इमारतों में कोई खासियत नहीं है। 1555 ई. में भारत लौटने के बाद हुमायूँ एक वर्ष ही जिंदा रहा। इसके बावजूद ईरानी संस्कृति से उसके दीर्घ सम्पर्क का प्रभाव हमीदा बानो बेगम के निरीक्षण में बने उसके मकबरे में देखा जा सकता है।

वास्तव में, मुगल स्थापत्य अकबर के समय से उभरना शुरू हुआ। उसने देशी और विदेशी तत्वों के मिले-जुले रूप को प्रश्रय दिया। देशी कलाकारों को अकबर ने खासकर महत्व दिया। फतेहपुर सीकरी के भवन इसके उत्तम उदाहरण हैं।

अकबर के पुत्र जहांगीर ने भवन निर्माण में कोई खास रुचि नहीं दिखाई परन्तु शाहजहां स्थापत्यगत कला का महान्तम संरक्षक था। भारत के कुछ सर्वोत्कृष्ट ऐतिहासिक भवनों का निर्माण उसी के शासनकाल में हुआ था। उसके काल में भवन निर्माण में लाल पत्थर का स्थान संगमरमर ने ले लिया और आंतरिक सजावट के लिए बहुमूल्य पत्थरों का इस्तेमाल किया जाने लगा। इसे **पैट्राड्यूरा** या पच्चीकारी के नाम से जाना जाता है। शाहजहां के काल में ही उभार वाले गुम्बदों और अनेक स्तरों वाली मेहराबों का प्रयोग शुरू हुआ।

औरंगजेब की मानसिकता अपने पिता से बिल्कुल भिन्न थी। इसका असर स्थापत्य शैली पर भी पड़ा। इस युग के भवनों में इस्तेमाल होने वाली वस्तुओं का स्तर सामान्य था और उसमें आडंबर का नामों निशान तक नहीं था।

33.2 मुगल स्थापत्य की शुरुआत

16 वीं. से 18 वीं शताब्दियों के दौरान स्थापत्य का इतिहास मुख्य रूप से वस्तुतः मुगल सम्राटों के भवन निर्माण संबंधी क्रियाकलापों से संबंधित है। इस बीच केवल पन्द्रह वर्षों का शासनांतराल आया। इस दौरान दिल्ली में सूर शासकों ने शासन किया।

यह सही है कि स्थापत्य संबंधी मुगल शैली का ठोस स्वरूप अकबर के शासन के दौरान सामने आया, परन्तु अकबर से पहले के दोनों मुगल सम्राट बाबर और हुमायूँ, ने मुगल स्थापत्य के मूलभूत आधारों की नींव रख दी थी।

33.2.1 बाबर की इमारतें

बाबर ने मात्र पांच वर्षों तक शासन किया और उसका अधिकांश समय अपने नवजात मुगल राज्य को सम्भालने और उसके लिए युद्ध करने में बीत गया। इसके बावजूद वह गैर धार्मिक भवनों के निर्माण में खूब रुचि लेता था। दुर्भाग्य से उसके द्वारा बनवायी गयी इमारतों में से काफी कुछ नष्ट हो चुकी हैं। 1526 ई. में बाबर ने पानीपत और सम्भल में दो मस्जिदें बनवायीं थीं। अब उनका ढांचा मात्र बचा है। ये दोनों ढांचे सामान्य स्थल हैं और इनमें कोई स्थापत्यगत विशेषता नहीं है।

बाबर ने अपने गैरधार्मिक कार्यों के तहत मुख्य रूप से ईरानी शैली पर आधारित बगीचे लगवाए और मंडप बनवाए। एक चित्र में उसे धौलपुर के बगीचे की रूपरेखा का निरीक्षण करते हुए दिखाया गया है। आगरा स्थित राम बाग और ज़हरा बाग नामक दो बगीचे भी उसी के बनवाये हुए कहे जाते हैं। परन्तु आज इन बगीचों की रूपरेखा देखने से लगता है कि इसमें कई प्रकर के परिवर्तन किये गये हैं। आज बाबर द्वारा निर्मित एक भी मंडप का अस्तित्व शेष नहीं रहा है।

33.2.2 हुमायूँ की इमारतें

बाबर की तरह हुमायूं के शासनकाल में निर्मित भवन भी आज कम ही बच पाये हैं। इस समय भारत में मुगल शासन अस्थिर था और ऐसी स्थिति में स्थापत्य संबंधी किसी महान् कार्य की आशा नहीं की जा सकती थी। इसके अतिरिक्त दिल्ली में 15 सालों तक सूर शासन स्थापित रहा और इस दौरान हुमायूँ को देश के बाहर ईरान जाकर रहना पड़ा। इसके बावजूद उसके प्रथम चरण के शासन के दौरान बनायी गई इमारतों में से दो मस्जिदों का अस्तित्व बचा हुआ है। एक जीर्ण-शीर्ण अवस्था में आगरे में स्थित है। ये इमारतें भी बाबर द्वारा बनायी गयी मस्जिदों के समान स्थापत्यगत दृष्टि से कोई खासयित नहीं रखती हैं।

हुमायूँ 1555 ई. में दिल्ली लौटा, परन्तु उसके बाद वह काफी कम दिन जिंदा रह पाया। वस्तुतः इस काल के दौरान कोई महत्वपूर्ण भवन निर्मित नहीं हुआ। हां, हुमायूँ के मकबरे का उल्लेख किया जा सकता है। देश से बाहर अपने ईरान प्रवास के दौरान उस पर पड़े ईरानी प्रभाव की झलक इस भवन में देखी जा सकती है। वस्तुतः यह इमारत मुगल स्थापत्य शैली के विकास की एक महत्वपूर्ण पहचान है। 1564 ई. में, हुमायूँ की मृत्यु के बाद, उसकी पत्नी हमीदा बानों बेगम की देखरेख में इसका निर्माण आरंभ हुआ। इस भवन के स्थापत्य शिल्पी मिराक मिर्जा गियास थे। वे ईरान के रहने वाले थे। वे अपने साथ कुशल ईरानी कारीगर दिल्ली में लाये थे। भवन निर्माण में उनकी तकनीक और योग्यता का पूर्णतः इस्तेमाल किया गया। इस प्रकार यह मकबरा भारत में ईरानी अवधारणा के आत्मसातीकरण का प्रतिनिधित्व करता है। सही अर्थों में हुमायूं का मकबरा अकबर के शासनकाल की इमारत है। परन्तु अपनी खासियतों के कारण इसे इस काल से अलग माना जाता है।
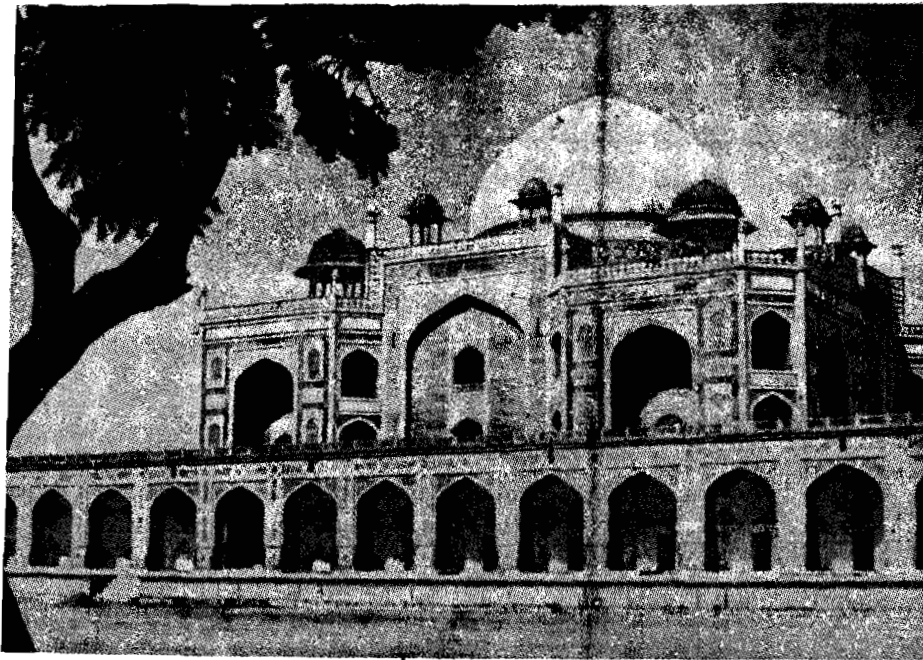
हुमायूँ का मकबरा

हुमायूँ के मकबरे में पहली बार बागानों का उपयोग किया गया था और इसे लाल बलुए पत्थर से बनाये तोरणयुक्त चबूतरे पर स्थापित किया गया था। यह आकार में अष्टकोणीय है और एक ऊंचे गुम्बद से आच्छादित है जो वस्तुतः दोहरा गुम्बद है। इसमें दो आवरण हैं और दोनों आवरणों के बीच में जगह छोड़ दी गयी है। आंतरिक आवरण अंदरूनी हिस्से की छत का काम करता है और बाहरी आवरण इमारत के अनुपात में ऊपर की ओर शल्क कंद के समान उभरा हुआ है। मकबरे के हरेक तरफ मध्य में एक द्वारमंडप है, जिसके साथ नुकीला मेहराब लगा हुआ है। यह मुख्य कक्ष में जाने का रास्ता है। इस भवन के अंदर कई कक्ष बने

हुए हैं। इनमें सबसे बड़ा कक्ष मध्य में है जिसमें सम्राट की कब्र है। प्रत्येक कोण पर बने छोटे कक्ष परिवार के अन्य सदस्यों की कब्रों के लिए बनाये गये हैं। प्रत्येक कक्ष अष्टकोणीय है और ये तिरछे रास्तों से जुड़े हुए हैं।

दोहरे गुम्बद में दो आवरण होते हैं। अंदर का आवरण भवन की अंदरूनी छत का काम करता है। ऊपरी आवरण भवन को महिमा मंडित बनाता है। दोहरे गुम्बद के शिल्प के कारण अंदरूनी छत को नीचे रखने में सुविधा हुई ताकि बेहतर संतुलन बन सके। बाहर के उभार और बनावट को बिना छेड़े हुए ऐसा किया जा सका। भारत आने से पहले दोहरे गुम्बद की तकनीक कुछ समय से पश्चिम एशिया में प्रचलित थी।

33.3 शासनांतराल : सूर स्थापत्य

1540 ई. में शेरशाह सूर ने भारत में मुगल शासन का विच्छिन्न कर दिया। अगले पन्द्रह वर्षों तक इस साम्राज्य पर सूर शासकों का आधिपत्य रहा, जिन्होंने स्थापत्य की दिशा में कई महत्वपूर्ण कार्य किए। उनके द्वारा बनाई गयी इमारतों ने मुगलों के भवन निर्माण के लिए पृष्ठभूमि का काम किया।

सूर शासकों ने विभिन्न परिस्थितियों में भवनों का निर्माण कराया और उनके द्वारा बनाई गयी इमारतें दो अलग-अलग इलाकों में स्थित हैं। इन्हें दो भिन्न कालों में विभाजित किया जा सकता है। शेरशाह कालीन प्रथम चरण 1530 से 1540 ई. के बीच का है, जिसका केन्द्र सासाराम (बिहार) में था। यहां लोदी शैली के कई मकबरों का निर्माण हुआ है (विस्तार के लिए पाठ्यक्रम ई.एच.आई.-3, खंड 8 पढ़िए)। इन पर लोदी शैली का प्रभाव स्पष्ट है। हुमायूं से साम्राज्य की बागडोर छीनने के बाद शेरशाह के शासनकाल का दूसरा चरण (1540-1545 ई.) आरंभ होता है। उसके संरक्षण में कई स्थापत्य प्रयोग किये गये जिनका बाद में मुगल शैली के रूप में परिपक्व रूप उभरा।

प्रथम चरण में कई मकबरों का निर्माण हुआ। इनमें से तीन शासकीय परिवार के सदस्यों के मकबरे हैं और एक इन मकबरों के शिल्पी अलीवल खां का है। ये भवन शेरशाह की महत्वाकांक्षा को परिलक्षित करते हैं। वह दिल्ली में पाये जाने वाले किसी भी स्मारक से बड़ा उदाहरण पेश करना चाहता था। अपनी इस योजना के तहत 1525 ई. में उसने अपने पिता हसन खां के मकबरे का निर्माण करवाया। परन्तु यह लोदी शैली की परम्परागत शैली का ही अनुसरण था। इस प्रकार की महत्वपूर्ण इमारत सासाराम स्थित शेरशाह का मकबरा है। स्थापत्य की दृष्टि से यह खूबसूरत इमारत है। इसमें शिल्पकार ने पहले की अपेक्षा बड़ा भवन निर्मित किया और उसे सुंदर तालाब के बीच में स्थित कर दिया। भवन में जाने के लिए बीच-बीच में मार्गसेतु बनाये गये। इसके अलावा इसमें कई मंजिलें बनाई गयीं और पांच अलग चरणों में इसे सुंदर पिरामिड संरचना का स्वरूप प्रदान किया गया। इस स्मारक का निर्माण चुनार के बेहतरीन बलुए पत्थर से किया गया था।

शेरशाह का मकबरा छत पर स्थित एक चबूतरे पर बना हुआ है जिसके चारों ओर सीढ़ियां बनी हुई हैं और वहां तक पहुंचने के लिए तालाब पर पुल बने हुए हैं। मकबरे के निचले चबूतरे की मुख्य धुरी की बनावट में कुछ कमी है। परन्तु निचले चबूतरे के ऊपर बनी संरचना की धुरी को थोड़ा झुकाकर इस कमी को दूर कर दिया गया है। मुख्य भवन में एक अष्टकोणीय कक्ष है। यह तोरण पथ से घिरा हुआ है, जो गलियारे का काम करते हैं। यह एक विस्तृत निचले गुम्बद से आच्छादित है। प्रत्येक चबूतरे के कोने में गुम्बदनुमा छतरियां हैं। क्रमशः न्यूनतम अवस्थाओं का उपयोग और चतुर्भुज से अष्टकोण और फिर गोलाकार पद्धति पर आना भारतीय स्थापत्य की सुव्यवस्था का प्रमाण है।

विकास का दूसरा चरण दिल्ली में शुरू हुआ। शेरजाह ने दिल्ली के छठे शहर के रूप में पुराना किला का निर्माण करवाया। आज इसके केवल दो द्वार ही बच पाये हैं। हालांकि इसमें महत्वपूर्ण भवन 1542 ई. में पुराना किला गढ़ी के अंदर निर्मित **किला ए कोहना** मस्जिद है। स्थापत्यगत योजना के तहत इस मस्जिद के उपासना गृह का अग्रभाग पांच झुके हुए खांचों
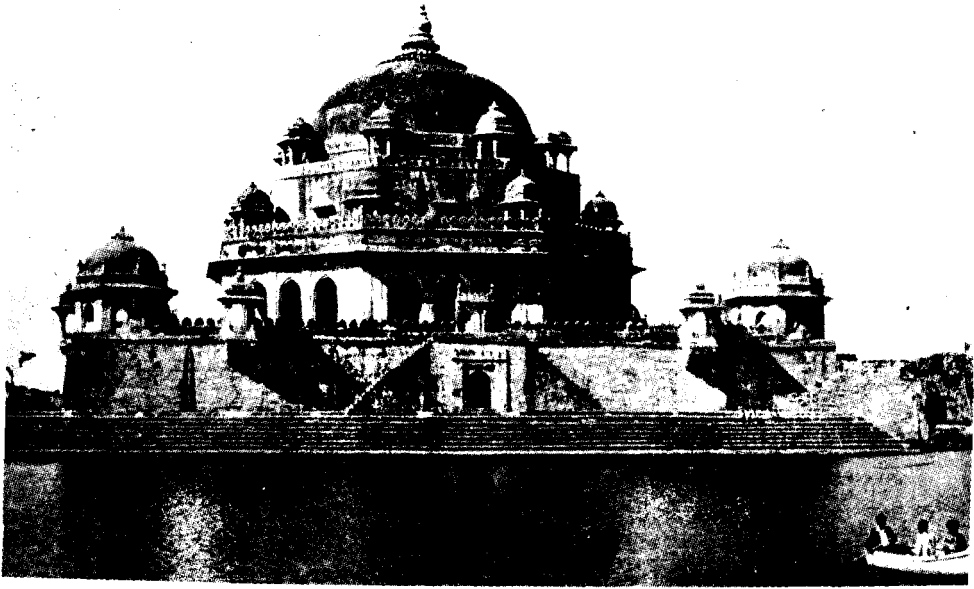
शेरशाह का मकबरा

किला-ए कुहना मस्जिद

में विभक्त है। मध्यकक्ष दूसरों की अपेक्षा बड़ा है और सभी में खुले झिर्रीनुमा मेहराब द्वार बने हुए हैं। अग्रभाग में काले और उजले संगमरमर तथा लाल बलुए पत्थर का खूबसूरती से उपयोग किया गया है। केन्द्रीय मेहराब के बगल में संकीर्ण, लंबी धारियों से युक्त भित्ति स्तम्भ बने हुए हैं। मस्जिद के पिछले हिस्से में पांच घुमावदार सीढ़िया हैं जिनमें बहुत-सी खिड़कियां और झरोखे बने हुए हैं।

इस भवन की उल्लेखनीय विशेषता मेहराबें का आकार है। गोलाई में ऊपर को बढ़ते हुए इनमें हल्का झुकाव या समतलपन दृष्टिगोचर होता है यह मुगलों के चहु-केंद्रित 'ट्यूडर' मेहराव के विकास की पूर्वपीढ़िका है।

बोध प्रश्न 1

1) निम्नलिखित का मिलान कीजिए :

1) राम बाग और जोहरा बाग	क) हमीदा बानो बेगम
2) हुमायूं का मकबरा	ख) शेरशाह का मकबरा
3) सासाराम	ग) शेरशाह
4) पुराना किला	घ) बाबर

2) साठ शब्दों में हुमायूं के मकबरे की विशेषताओं पर विचार कीजिए।

....
....
....
....
....

33.4 अकबर कालीन स्थापत्य

अकबर के शासनकाल को मुगल स्थापत्य का निर्माण काल माना जा सकता है। इस दौरान भारतीय-इस्लामी स्थापत्य की मिली-जुली स्थापत्य कला का विकास हुआ।

33.4.1 संरचनात्मक स्वरूप

अकबर के शासनकाल में स्थापत्य के क्षेत्र में देशी तकनीकों को बढ़ावा मिला और अन्य देशों के अनुभव का भी उपयोग किया गया। इस प्रकार अकबर के संरक्षण में पनपने वाली स्थापत्य शैली की निम्नलिखित विशेषताएं उल्लिखित की जा सकती हैं :

क) भवन निर्माण में मुख्य रूप से लाल बलुए पत्थर का उपयोग हुआ;

ख) शहतीरों का अधिकतम उपयोग;

ग) मेहराबों का संरचनात्मक स्वरूप की अपेक्षा अलंकरण के लिए प्रयोग;

घ) गुम्बद "लोदी" शैली में बनते रहे, कभी-कभी इसे खोखला बनाया जाता था, परन्तु तकनीकी तौर पर यह सही अर्थों में दोहरा गुम्बद नहीं होता था;

ङ) खम्भे का अग्रभाग बहुफलक युक्त होता था और इन खम्भों के शीर्ष पर ब्रैकेट या ताक बने होते थे; और

च) अंदरूनी हिस्से में अलंकरण के तौर पर स्पष्ट रूप से बड़ी-बडी नक्काशी तथा पच्चीकारी की जाती थी और उन्हें चमकीले रंगों से रंगा जाता था।
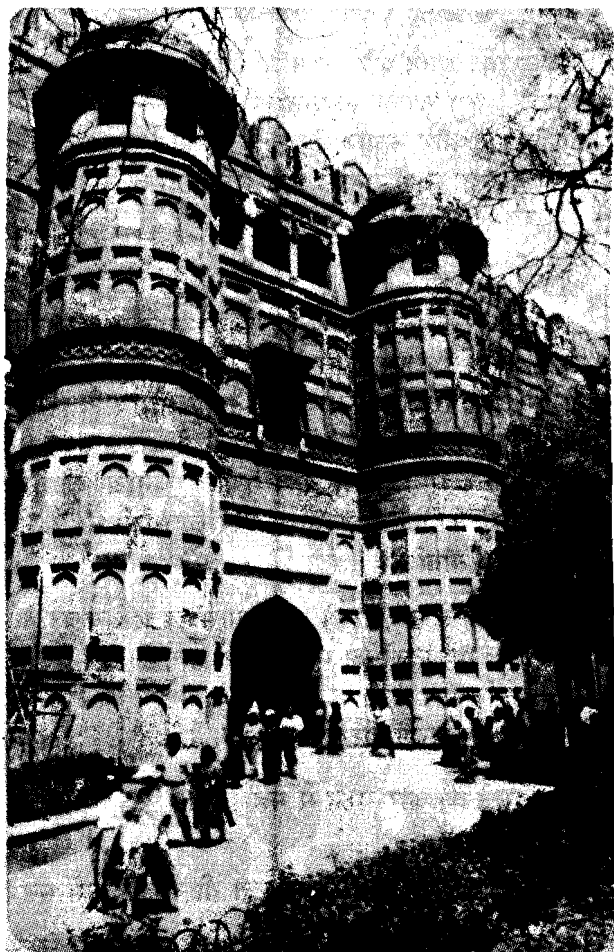
आगरा के किले का फाटक
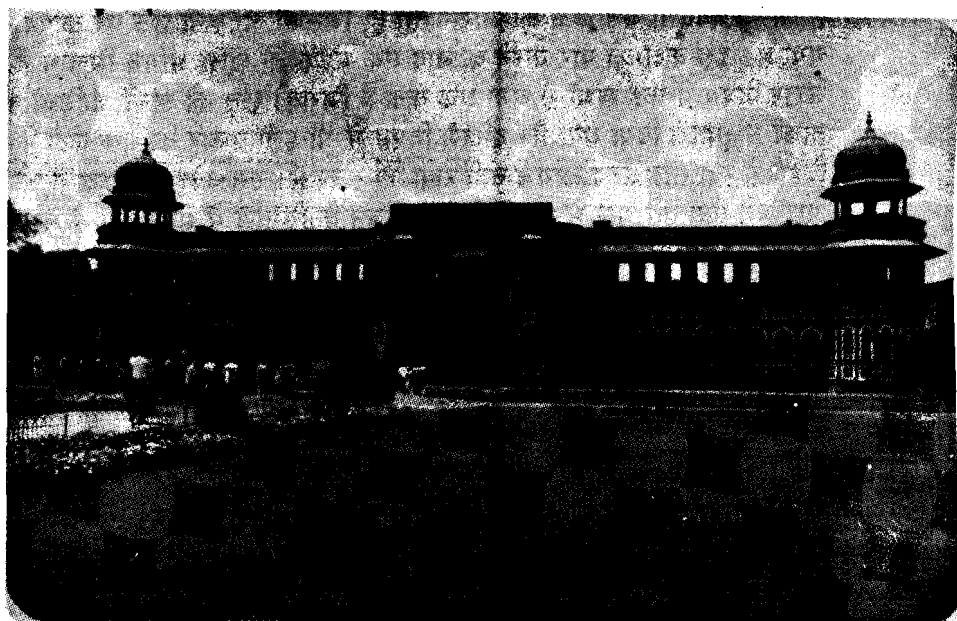
जहाँगीरी महल

33.4.2 भवन परियोजनाएं

अकबर की भवन परियोजनाओं को दो प्रमुख समूहों में बांटा जा सकता है। दोनों अलग-अलग चरणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। पहले समूह में मुख्य रूप से आगरा, इलाहाबाद और लाहौर में बने किले और कुछ महलों के भवन शामिल हैं। दूसरा समूह मुख्य रूप से फतेहपुर में उसकी नयी राजधानी के निर्माण से संबद्ध है।

क) प्रथम चरण

अकबर के शासनकाल की आरंभिक भवन परियोजनाओं में आगरा के किले का निर्माण उल्लेखनीय है। इसका निर्माण एक किले रूपी महल के रूप में हुआ था। इसकी विशालकाय दीवारें और परकोटे किसी महान् सत्ता और शक्ति की याद दिलाते हैं। किले के भीतर, अकबर ने गुजरात और बंगाल शैली में कई इमारतें बनवायीं थीं। हालांकि जहांगीरी महल को छोड़कर शाहजहां ने अन्य सभी संरचनाओं को तुड़वाकर फिर से निर्मित करवाया था। आज किले का दिल्ली दरवाजा और जहांगीरी महल ही अकबर के काल के भवनों का एकमात्र प्रतिनिधि है।

आगरे के किले का दिल्ली दरवाजा संभवत: अकबर के आरंभिक स्थापत्यगत प्रयास का नमूना है। यह किले का मुख्य प्रवेश द्वार है। इस दरवाजे के स्थापत्य में नयापन है, जो भारत में भवन निर्माण कला के नये युग के आरंभ की सूचना देता है। इस दरवाजे की योजना सरल है। इसका विवरण इस प्रकार है :

- सामने की ओर मध्य में मेहराब पथ था और उसके दोनों ओर झुकी हुई अष्टकोणीय दीवारें थीं;
- पीछे की ओर तोरणयुक्त छत थी और जिसमें मंडप और कंगूरे बने हुए थे; और

ख) इसमें लाल बलुए पत्थर पर सफेद संगमरमर से अलंकरण किया गया था।

जहांगीरी महल का निर्माण अकबर ने करवाया था और यह लाल बलुए पत्थर से बने भवन का उत्कृष्ट नमूना है। अकबर द्वारा किले के भीतर निजी और घरेलू कार्य के लिए बनाये गये भवनों में केवल यही बचा हुआ है। यह हिंदू और इस्लामी भवन निर्माण पद्धति के मिले-जुले रूप का सुंदर नमूना है। इसमें विभिन्न कक्ष बने हुए हैं। पूर्व दिशा के अग्रभाग में प्रवेश द्वार है जो गुम्बदनुमा बड़े कक्ष की ओर जाता है, जिसकी अंदरूनी छत पर काफी नक्काशी की गयी है। इस कक्ष को पार करने के बाद एक मध्यवर्ती खुला आंगन मिलता है। इस आंगन की उत्तर दिशा में कई खंभों से बना एक कक्ष है जिसकी छत को खंभों, कड़ियों और घुमावदार ताकों से सहारा दिया गया है। दक्षिण दिशा में भी इसी प्रकार का एक कक्ष है। हालांकि पूर्व दिशा में यह सामंजस्य कायम नहीं रखा जा सका है। इस ओर कई कक्ष हैं जो यमुना नदी की ओर बने एक गलियारे में खुलते हैं। पूरे भवन के निर्माण में मुख्य रूप से लाल पत्थर, कड़ी और ब्रैकेट या ताक का इस्तेमाल किया गया है जो इसकी प्रमुख संरचनागत विशेषता दर्शाती हैं।

लाहौर और इलाहाबाद के किले में भी यह विशेषता देखने को मिलती है। केवल अजमेर का किला दूसरे ढंग से बना हुआ है। यह क्षेत्र साम्राज्य के सीमांत प्रदेश के निकट था अत: किले की दीवारों की मोटाई दोगुनी कर दी गयी थी।

ख) दूसरा चरण

अकबर की स्थापत्यगत योजना के दूसरे चरण की शुरुआत सीकरी में साम्राज्य की नयी राजधानी के निर्माण के साथ होती है। यह आगरा से 40 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। नयी राजधानी का नाम फतेहपुर रखा गया।

यह भारत के स्मारकों में प्रमुख स्थान रखता है। फतेहपुर सीकरी एक शहर है। इसका निर्माण इस तरीके से किया गया है कि सहन, दीवाने आम और जामा मस्जिद जैसे सार्वजनिक स्थल निजी महल के ही अंग बन गये हैं। इस शहर का निर्माण काफी कम समय (1571—1585 ई.) में किया गया और इसके लिए कोई वृहद योजना नहीं बनाई गयी थी।

भवन एक दूसरे के आसपास बने थे और एक दूसरे से जुड़े हुए थे। इस परिसर के निर्माण में असममिति का जानबूझकर प्रयोग किया गया है। सभी भवनों में बेहतरीन लाल बलुए पत्थर और परम्परागत शहतीर निर्माण पद्धति का प्रयोग किया गया है। खंभों, कड़ियों, ताकों, टाइलों और स्तंभों का निर्माण स्थानीय पत्थरों से किया गया है उन्हें बिना गारे से जोड़ा गया है।

फतेहपुर सीकरी के भवनों को दो कोटियों में विभक्त किया जा सकता है – धार्मिक और गैर-धार्मिक। धार्मिक भवनों में प्रमुख हैं क) **जामा मस्जिद,** ख) **बुलंद दरवाजा,** ग) **शेख सलीम चिश्ती की मजार।** गैर-धार्मिक भवन कई प्रकार के हैं और इनकी संख्या भी ज्यादा है। इन्हें इस प्रकार विभक्त किया जा सकता है : क) महल, ख) प्रशासनिक भवन, ग) अन्य प्रकार के भवन। यह गौर करने की बात है कि आमतौर पर धार्मिक भवनों का निर्माण अर्द्धवृत्ताकार या धनुषाकार शैली में हुआ जबकि गैर-धार्मिक भवनों में शहतीर पद्धति की प्रमुखता है।

जामा मस्जिद की योजना बिल्कुल एक मस्जिद के अनुरूप है – मध्य में एक बरामदा, तीन तरफ से तोरण पथ और ऊपर की ओर गुम्बदनुमा संरचना। उपासना गृह की पश्चिमी तरफ तीन अलग-अलग साधनालय या एकांत स्थल बने हुए हैं। इसमें एक गुम्बद और तोरण पथ है। मस्जिद का आम प्रवेश द्वार पूर्व की ओर है। यह प्रवेश द्वार आकार में काफी बड़ा और अर्द्ध षट्कोणीय ड्योढ़ी के समान है।

1596 ई. में अकबर ने दक्षिणी प्रवेश द्वार के स्थान पर **बुलंद दरवाजा** नामक विजय द्वार निर्मित किया। यह लाल और पीले बलुए पत्थर से बनाया गया है और मेहराबों की रूपरेखा निर्मित करने में सफेद संगमरमर का भी उपयोग किया गया है। बाहर की ओर से सीढ़ियों की ऊंची लंबी कतार के कारण यह और भी ज्यादा ऊंचा और भव्य दीखता है। प्रवेश द्वार में एक विशाल मध्यवर्ती मेहराब है जिससे एक करीने से गुम्बदनुमा छतरियां जुड़ी हुई हैं। 1573 ई. में अकबर के गुजरात अभियान की सफलता के उपलक्ष्य में बुलंद दरवाजा का निर्माण हुआ था।

उत्तरी पश्चिमी कोने में स्थित **जामा मस्जिद** के बरामदे में सलीम चिश्ती की **मजार है।** यह स्थापत्य कारीगरी का एक सुंदर नमूना है और भारत में संगमरमर के कलात्मक उपयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह 1581 ई. में बनकर तैयार हो गया था और मूलतः इसमें संगमरमर का उपयोग अंशतः ही हुआ था। छज्जे को सहारा देता घुमावदार ताक और नक्काशी किए हुए जाली के पर्दे इस मस्जिद की उल्लेखनीय विशेषताएं हैं।

फतेहपुर सीकरी महल परिसर में अनेक कक्ष और हिस्से हैं। इनमें सबसे विशाल जोधाबाई महल है। यह भव्य और आडंबरहीन है। बाहर की दीवार समतल है। मुख्य भवन अंदर की ओर हैं और सभी एक आंगन में खुलते हैं। उत्तर की ओर तोरणयुक्त गलियारा और बालकनी है। ऊपरी मंजिल के उत्तरी और दक्षिणी हिस्सों में कमरे हैं। इनकी छतों में फांक हैं, जिसे मुल्तान से लाये गये चमकीले बेहतरीन नीले पत्थरों से पाटा गया है।

दीवाने खास के दक्षिण-पूर्व में पांच मंजिली इमारत खड़ी है जिसे **पंच महल** के नाम से जाना जाता है। यह इस महल परिसर का अनूठा भवन है। इसमें जैसे-जैसे ऊपर चढ़ते जाते हैं मंजिलों का आकार छोटा होता जाता है। सबसे ऊपर एक गुम्बदनुमा छतरी है। इस भवन के कुछ हिस्सों में लाल बलुए पत्थर की झिर्रियां लगवायी गयी हैं। परन्तु आज इनमें से कोई सही सलामत नहीं है। एक रुचिकर तथ्य यह है कि जिन खंभों पर ये पांच मंजिलें खड़ी की गयी हैं, वे सभी खंभे आकार प्रकार में भिन्न हैं।

प्रशासनिक भवनों में, निस्संदेह, **दीवाने खास** सबसे अलग और खास है। इस भवन की योजना आयताकार रूप में की गयी है और बाहर की ओर से इसमें दो मंजिले हैं। इसमें एक सपाट छत है जिसके प्रत्येक कोने के खंभों पर गुंबदनुमा छतरी लगी हुई है। बीच में एक खूबसूरत नक्काशी किया हुआ स्तम्भ है, जिसके विशाल ताक के ऊपर एक वृत्ताकार पत्थर का चबूतरा बना हुआ है। इस चबूतरे से चार रास्ते निकलते हैं। ये समकोणीय रूप से अवस्थित हैं और कक्ष के ऊपरी हिस्से के चारों ओर की वीथी को जोड़ते हैं। इस संरचना का मुख्य स्थापत्यगत आकर्षण केन्द्रीय स्तम्भ है। इसकी धुरी कई प्रकार से निर्मित है और शीर्ष पर इसकी कई शाखाएं हैं, जो कई घुमावदार और दोलायमान ताकों से जुड़ी हैं। इनके सहारे केन्द्रीय चबूतरा टिका हुआ है।
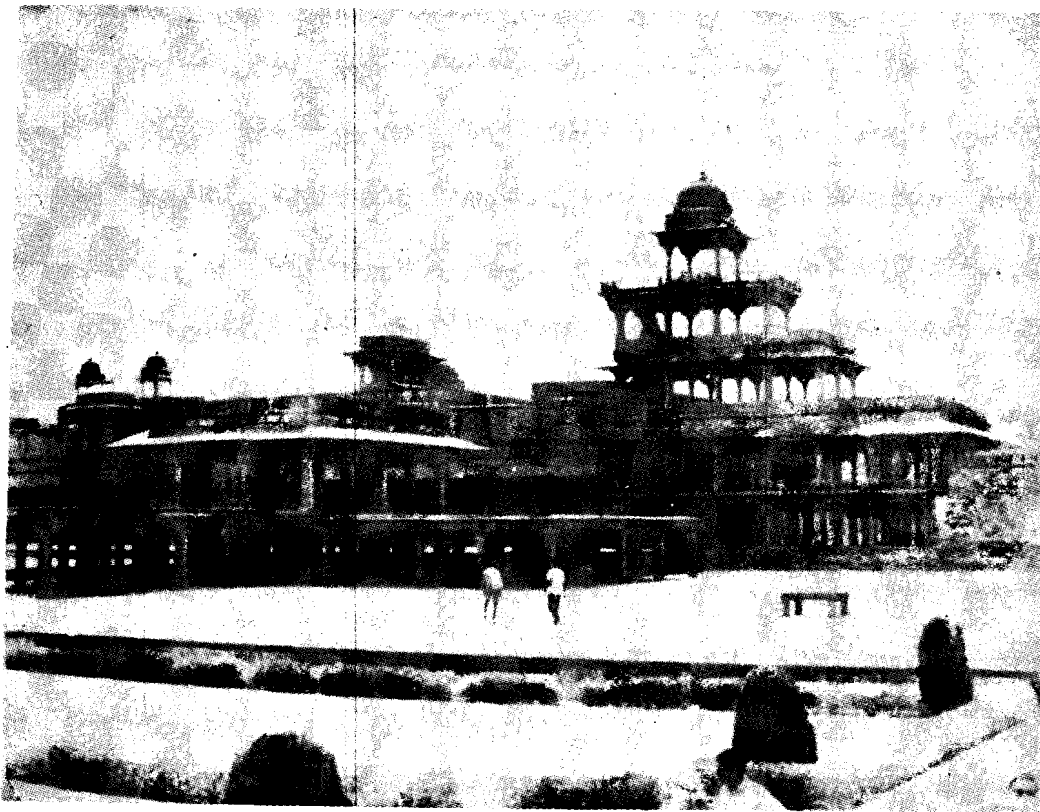
पंच महल
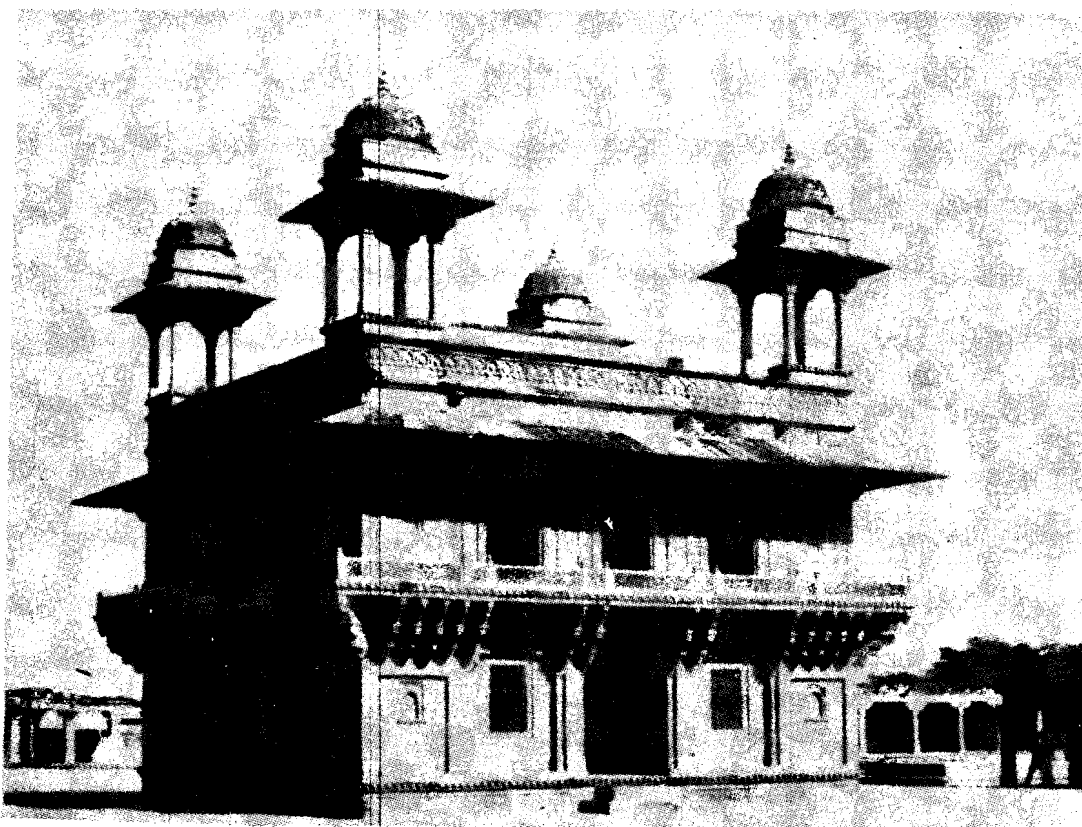
विवान-ए खास

इस श्रेणी का दूसरा महत्वपूर्ण भवन **दीवाने आम** है। यह एक बड़ा आयताकार बरामदा है जो चारों ओर से स्तम्भों से घिरा हुआ है। सम्राट का चबूतरा पश्चिमी किनारे पर है। यह ऊपर उठी हुई संरचना है जिस पर बैठे हुए व्यक्ति को कोई भी देख सकता है। ऊपर पत्थर की छत है और वह पांच ओर से समान रूप से खुला हुआ है। चबूतरा तीन भागों में विभक्त है, मध्यवर्ती भाग शायद सम्राट के बैठने की जगह होगी जो कि दोनों किनारों से हटकर है और इसमें बेहतरीन चमकीले पत्थर ज्यामितीय आकार में लगाये गये हैं।

पूरे नगर परिसर में भिन्न-भिन्न प्रकार की इमारते फैली हुई हैं :

i) दो **कौंरवा सरायें**, एक आगरा दरवाजे के तुरंत बाद दाहिनी ओर स्थित है; और दूसरी, जो पहले वाली से बड़ी है, **हाथी पोल** के बाहर बायीं तरफ स्थित है।

ii) कारखाना भवन **दीवाने आम** और **नौबत खाना** के बीच में अवस्थित है जिसमें कई ईंट के बने गुम्बद हैं, जिनमें विकिरण की क्षमता है। वे क्षेतिज कम हैं।

iii) **कारवां सराय** के सामने और **हाथी पोल** के निकट जल-आपूर्ति की व्यवस्था की गयी है। इसमें एक गहरी **बावली** (सीढ़ीदार कुंए) है जिसके दोनों ओर दो कोष्ठ हैं जिसके जरिए सारे शहर को जल की आपूर्ति की जाती थी।

बोध प्रश्न 2

1) निम्नलिखित वक्तव्यों के सामने सही (✓) और गलत के सामने (×) का निशान लगाइए :

   i) अकबर ने अपने अधिकांश भवनों में संगमरमर का उपयोग किया।

   ii) अकबर के भवनों में कभी भी दोहरे गुम्बद का इस्तेमाल नहीं किया गया।

   iii) अकबर की स्थापत्य शैली में धनुषाकार और शहतीर शैली का सामंजस्य है।

   iv) खाली जगहों को भरने के लिए अकबर ने छज्जों का उपयोग किया।

2) फतेहपुर सीकरी के महत्वपूर्ण गैर-धार्मिक भवनों पर एक टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

....

3) फतेहपुर सीकरी में बने धार्मिक भवनों का उल्लेख करते हुए उन पर दो पंक्तियां लिखिए।

....

....

....

....

33.5 जहांगीर और शाहजहां कालीन स्थापत्य

1605 ई. में अकबर की मृत्यु के बाद भी उसके उत्तराधिकारियों के नेतृत्व में एक खास मुगल स्थापत्य शैली का विकास होता रहा। अब साम्राजय की नींव पक्की हो गयी थी और राजकोष में अपार धन इकट्ठा हो गया था। जहांगीर और शाहजहां ने इसका जमकर फायदा उठाया और कला के विकास की ओर ध्यान दिया।
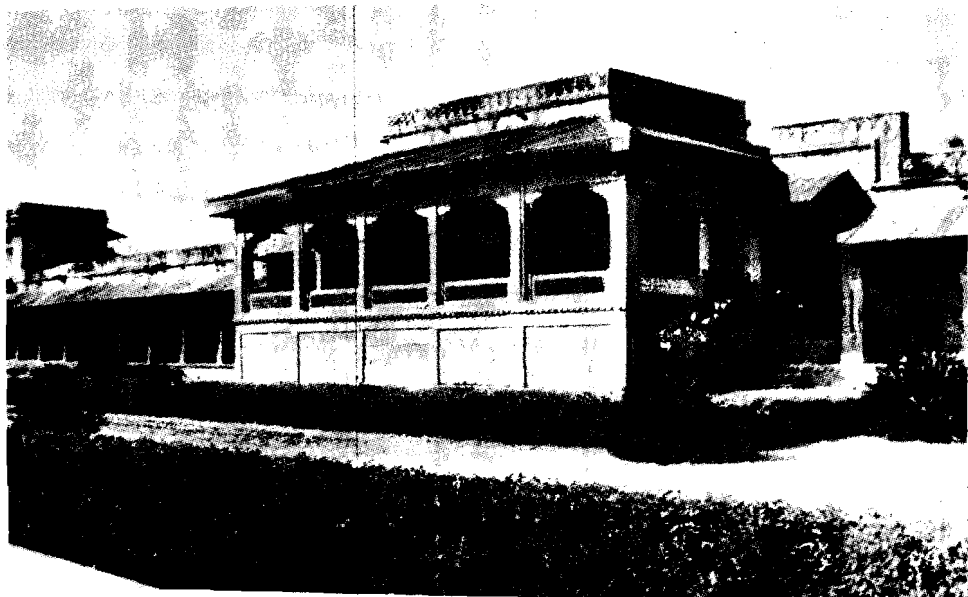
दिवान-ए आम
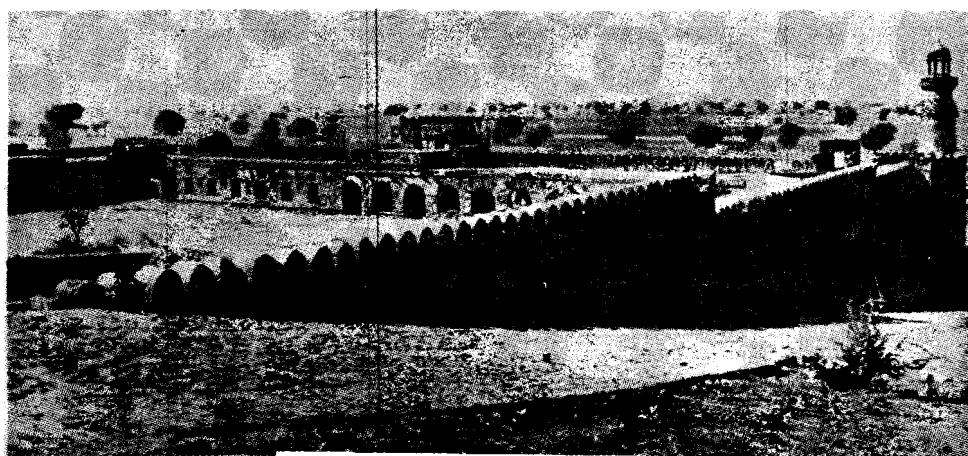
कारवाँ सराय

33.5.1 प्रमुख विशेषताएँ

भवन निर्माण कला के क्षेत्र में जहांगीर और शाहजहां के शासनकाल संगमरमर के प्रयोग के काल हैं। लाल बलुए पत्थर का स्थान संगमरमर ने ले लिया और इसका बेहतरीन प्रयोग होने लगा। इस कारण कुछ शैलीगत परिवर्तन भी आये जो इस प्रकार हैं :

क) मेहराब को नया रूप दिया गया। इसमें घुमावदार फूल-पत्ती का उपयोग होने लगा जिसमें आमतौर पर नौ नुकीले सिरे होते थे;

ख) रंगे हुए मेहराब के संगमरमर के तोरण पथ इस काल की आम विशेषता हो गयी;

ग) गुम्बद कंदीय स्वरूप ग्रहण करने लगा और इसमें एक प्रकार की तंगी भी आने लगी। दोहरे गुम्बद का आम चलन हो गया;

घ) अलंकरण के लिए पच्चीकारी के प्रयोग में रंगीन पत्थरों का खूब उपयोग किया जाने लगा; और

ङ) जहांगीर के शासनकाल के उत्तरार्द्ध से पच्चीकारी का एक नया तरीका सामने आया जिसे पित्राड्यूरा के नाम से जाना जाता है। इस पद्धति के तहत अशम, लेजुलाइट, सुलेमानी, चीनी मिट्टी, पुखराज और कार्नेलियन जैसे पत्थरों को संगमरमर में बड़ी नफासत के साथ फूलपत्तियों के रूप में जड़ा जाता था।

33.5.2 प्रमुख इमारतें

अकबर का मकबरा इस युग का पहला प्रमुख और उल्लेखनीय भवन है। यह आगरा से आठ किलोमीटर दूर दिल्ली मार्ग पर सिकन्दरा में अवस्थित है। अकबर ने इसकी रूपरेखा खुद बनायी थी और इसका निर्माण कार्य अपने जीवन काल में ही आरंभ करवा दिया था परन्तु उसकी मृत्यु के समय यह कार्य अधूरा था। इसके बाद जहांगीर ने इसकी मूलरेखा में परिवर्तन करके इसे नये रूप में निर्मित करवाया और इस भवन को पूरा किया। आज यह पूरा परिसर जिस रूप में खड़ा है वह अकबर और जहांगीर की स्थापत्यगत योजनाओं का असाधारण सम्मिश्रण है।

इस परिसर के बीच में मकबरा स्थित है जो चारों ओर से बागान से घिरा हुआ है। प्रत्येक ओर की चहारदीवारी के मध्यभाग में प्रवेश द्वार बने हुए हैं।

मध्य में स्थित मकबरे वाला भवन चौकोर आकार का है और इसमें तीन मंजिलें हैं। पहली मंजिल वस्तुतः एक छतयुक्त चबूतरा है जो तहखाने का काम करता है। इस चबूतरे के भीतर शवागार कक्ष के चारों ओर शव कक्ष बने हुए हैं और दक्षिण दिशा में एक पतला ढँलवा गलियारा है जो कब्र तक जाता है। बीच वाले हिस्सों में लाल बलुए पत्थर से बनी तीलियों के तीन स्तर हैं, जिनमें पूरी तरह शहतीरों का उपयोग किया गया है।

ऊपरी मंजिल पर लाल बलुए पत्थर के स्थान पर सफेद संगमरमर का उपयोग किया गया है। इसमें एक खुला सभागार है जो चारों ओर से जालियों से मुक्त स्तंभावलियों से घिरा हुआ है। मकबरा चहारदीवारी के प्रवेश द्वार से गुफाओं और सेतुपथों से जुड़ा हुआ था। परन्तु इसमे केवल दक्षिण की ओर से ही प्रवेश किया जा सकता था बाकी प्रवेश द्वार दिखावटी थे जिनका निर्माण एकरूपता के लिए किया गया था।

दक्षिणी प्रवेश द्वार दो मंजिला था जिसके प्रत्येक कोने पर सफेद संगमरमर की गोल मीनारें खड़ी थीं। सम्पूर्ण प्रवेश द्वार का ढांचा रंगीन पलस्तर के रंग के पत्थर से अलंकृत है और इसमें संगमरमर जोड़ा गया था इसमें खास बात यह है कि इस अलंकरण में परम्परागत फूल-पत्ती के बेलबूटों और आयतों के अतिरिक्त, गज (हाथी), हंस, पद्म (कमल), स्वास्तिक और चक्र का भी प्रयोग किया गया था। सिकन्दरा स्थित अकबर के मकबरे का स्थापत्यगत महत्व इस बात से सिद्ध होता है कि इसके बाद बनने वाले अनेक मकबरों में इस भवन की छाप दिखायी पड़ती है। लाहौर के निकट शाहदरा में स्थित जहांगीर का मकबरा और आगरा स्थित नूरजहां के पिता मिर्जा गियास बेग का मकबरा इसके उत्तम उदाहरण हैं।

अपने पिता मिर्जा गियास बेग की कब्र पर नूरजहां ने 1622-28 ई. में इतमादउद्दौला का मकबरा निर्मित किया। यह मकबरा अकबर के काल के बाद के स्थापत्यगत परिवर्तन का
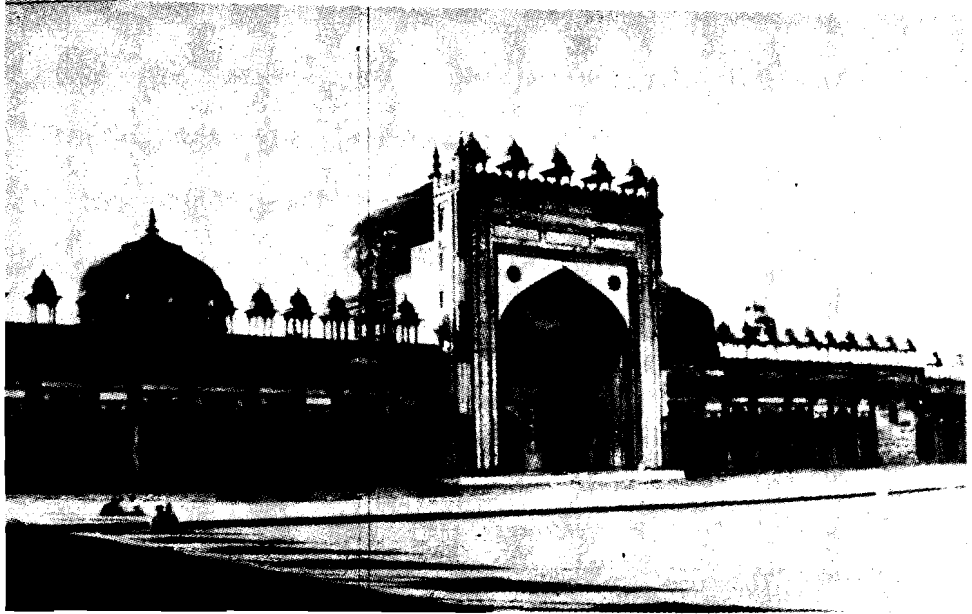
जामामस्जिद, फतहपुर सीकरी
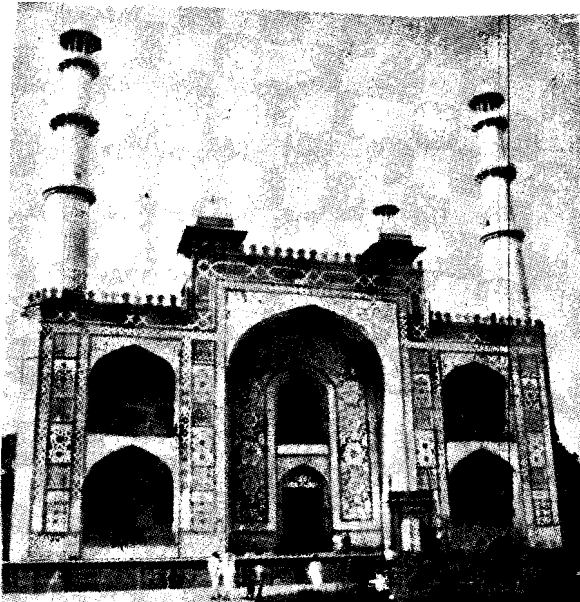
अकबर का मकबरा

अकबर के मकबरे का प्रवेश द्वार
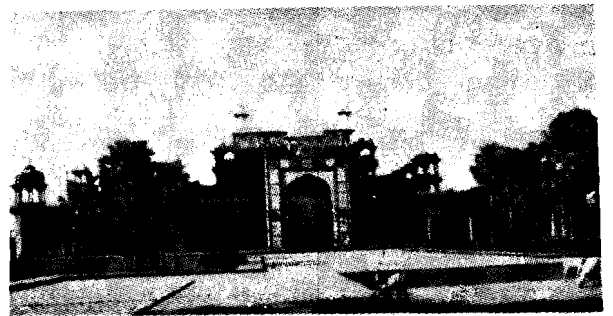
सूचक है। जहांगीर और शाहजहां के शासनकाल के स्थापत्य और अकबर के स्थापत्य में एक खास अंतर सूक्ष्मता और भव्यता का है। इस ढांचे में इसी सूक्ष्मता की अवधारणा की झलक मिलती है।

मकबरा चौकोर है जो थोड़े से उठे हुए चबूतरे पर बना हुआ है। प्रत्येक कोने पर चार गुम्बद युक्त अष्टकोणीय मीनारें हैं। केन्द्रीय कक्ष के चारों ओर बरामदा है जो खूबसूरत संगमरमर की जाली से घिरा हुआ है और इस पर मोज़ेक और **पित्राड्यूरा** किया हुआ है। केन्द्रीय कक्ष में इतमादउद्दौला और उसकी पत्नी की कब्र है, जो पीले संगमरमर की बनी है। बगल के कमरे रंगीन फूल पत्तियों से अलंकृत हैं। सफेद संगमरमर का मकबरा चारों ओर से बागों और दीवारों से घिरा बड़ा खूबसूरत दीखता है। इसके चारों ओर लाल बलुए पत्थर के बने चार प्रवेश द्वार हैं।

यह ध्यान देने की बात है कि जहांगीर चित्रकला का बहुत बड़ा प्रेमी और संरक्षक था। उसे जानवरों, पेड़-पौधों, फूलों, आदि से अगाध स्नेह था। यह उसके काल के चित्रों से भी प्रमाणित होता है। इसीलिए उसने भवनों की अपेक्षा बागानों और फुलवारियों के निर्माण में अपेक्षाकृत अधिक रुचि दिखाई। कश्मीर में स्थित **शालीमार बाग** और **निशात बाग** जैसे मुगल बागान जहांगीर की इसी रुचि के परिचायक हैं।

जहांगीर के विपरीत उसका पुत्र और उत्तराधिकारी शाहजहां एक महान भवन निर्माता था। उसके शासनकाल के दौरान भवन निर्माण में संगमरमर का बड़े पैमाने पर सर्वोत्कृष्ट कलात्मक उपयोग हुआ। शाहजहां ने निम्नलिखित प्रकार के भवन बनवाए :

क) किले रूपी महल, मसलन दिल्ली का लाल किला;

ख) मस्जिदें, उदाहरणस्वरूप आगरे के किले में स्थित **मोती मस्जिद** और दिल्ली की **जामा मस्जिद**; और

ग) बाग से घिरे मकबरे, उदाहरणस्वरूप **ताजमहल**।

यहां हम शाहजहां के शासनकाल के दौरान निर्मित अधिक महत्वपूर्ण और प्रतिनिधि भवनों की चर्चा करेंगे।

लालकिला आयताकार है और इसकी उत्तरी दीवार यमुना नदी के पुराने बहाव क्षेत्र से सटी हुई है। दिल्ली दरवाजा और लाहौरी दरवाजा दो प्रमुख प्रवेश द्वार हैं। दीवार के साथ-साथ एक नियमित दूरी पर विशाल गोलाकार बुर्ज है। दरवाजों के दोनों ओर अष्टकोणीय मीनारें हैं। इसमें अंधेरी गलियां हैं और इसके ऊपर बुर्ज बने हुए हैं। नदी की दिशा को छोड़कर दीवार से सटी हुई खाई बनी हुई है। किले के अंदर अनेक उल्लेखनीय भवन हैं जिनमें **दीवाने आम, दीवाने खास** और **रंगमहल** महत्वपूर्ण हैं। **दीवाने आम** और **रंगमहल** छतयुक्त वीथियां हैं इसमें बलुए पत्थर के स्तंभ हैं जिन पर संगमरमर के चूर्ण का मजबूत प्लास्टर किया हुआ है। **दीवाने आम** की पूर्वी दीवार के साथ सम्राट का सिंहासन वाला चबूतरा बना हुआ है जिसकी छत बंगाल स्थापत्य की शैली में निर्मित है। इस इमारत की पूर्वी दिशा में रंगमहल स्थित है जिसके आगे एक खुला बरामदा है और पत्थर की ओर रंगमहल से मिलता जुलता **दीवाने खास** है। इन सभी इमारतों की दीवारों, स्तंभों और खंभों पर फूल-पत्तियों का अलंकरण है।

आगरा के किले की **मोती मस्जिद** में खुले तोरणयुक्त प्रार्थना कक्ष का इस्तेमाल कर शाहजहां ने एक नया प्रयोग किया। इसके अलावा मस्जिद में मीनारें भी नहीं बनायी गयीं। इनके स्थान पर प्रार्थना कक्ष के चारों कोनों पर छतरियों का उपयोग किया गया। एक अर्द्धचंद्राकार तोरण के ऊपर तीन उभरे हुए गुम्बद बनाये गये थे। पूरी इमारत संगमरमर से बनी है और काले संगमरमर से उन पर कुरान की **आयतें** खुदी हैं इससे इसका सौन्दर्य और भी बढ़ गया है।

दिल्ली की **जामी मस्जिद**, फतेहपुर सीकरी की **जामी मस्जिद** का विस्तारित और बड़ा रूप है और यह भारत की अपने आप में एक बड़ी इमारत है। यह एक ऊंचे चबूतरे पर बनी हुई है जिसके चारों ओर तोरण पथ है जिन्हें दो तरफ से खुला छोड़ दिया गया है। मुख्य प्रवेश पूर्वी दिशा से है और ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ियां बनी हुई हैं। इससे इमारत की ऊंचाई का आभास बढ़ जाता है। उत्तरी और दक्षिणी भाग के मध्य में दो छोटे प्रवेशद्वार हैं। मस्जिद के
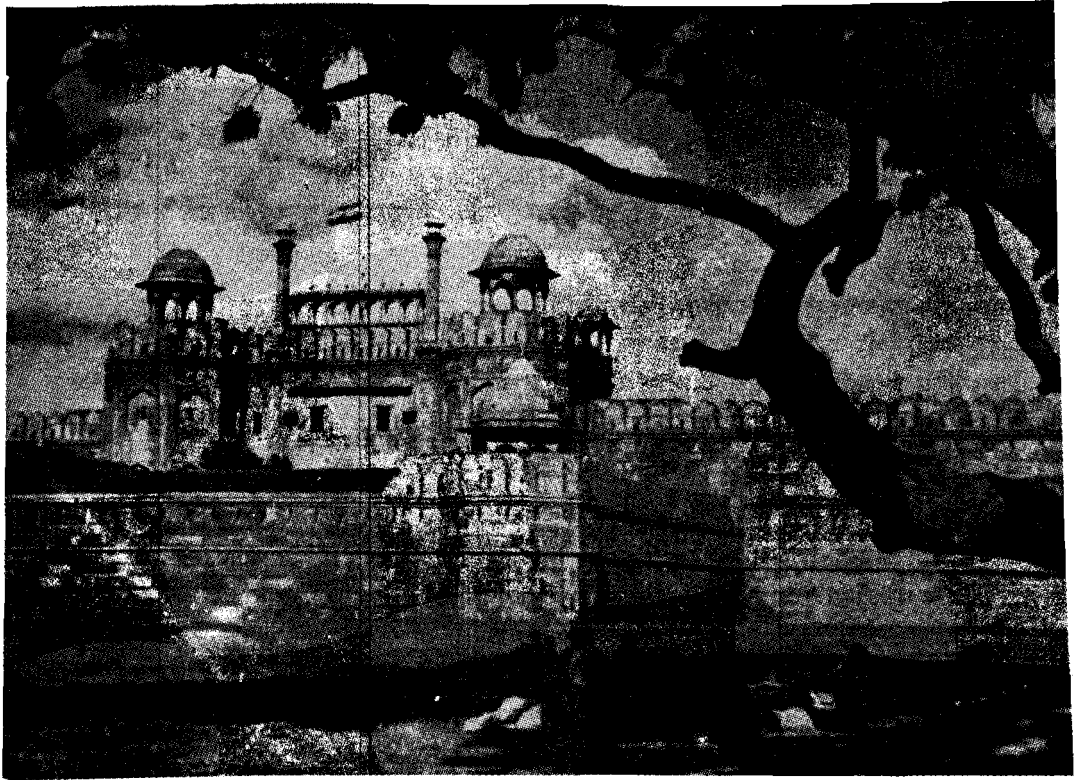
लाल किला
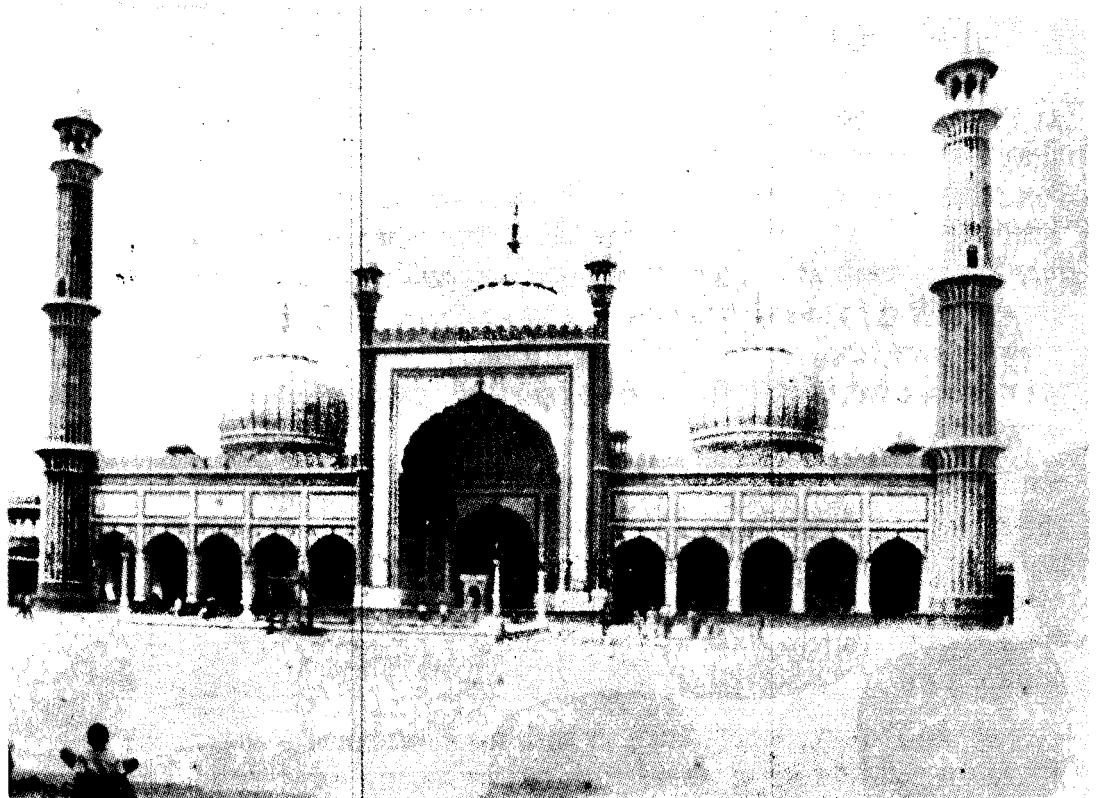
जामा मस्जिद

अंदर की योजना फतेहपुर सीकरी की **जामी मस्जिद** के अनुरूप है—तीन तरफ स्तंम्भावलियां हैं और चौथी तरफ उपासना स्थल है। उपासन स्थल के ऊपर संगमरमर निर्मित तीन बाहर की ओर उभरे हुए केंद्रीय गुंबद हैं। पूरी इमारत लाल बलुए पत्थर से बनी है और उनमें प्लास्टर के स्थान और चौखटों के ढांचे को अलंकृत करने के लिए संगमरमर का उपयोग हुआ है।

निस्सन्देह **ताजमहल** शाहजहां की सर्वोत्कृष्ट और अनुपम रचना है। इसका निर्माण कार्य 1632 ई. में आरंभ हुआ और इसके बनने में लगभग बाईस वर्ष लगे। यह परिसर आयताकार है और ऊंची दीवारों से घिरा हुआ है। दक्षिण दिशा के मध्य में एक ऊँचा प्रवेश द्वार है। कुल मिलाकर छह अष्टकोणीय वीथियां हैं -- प्रत्येक कोने पर एक पूर्वी और एक पश्चिमी दिशा में। इस परिसर के उत्तरी छोर में ऊंचे चबूतरे पर ताज की मुख्य इमारत अवस्थित है। एकरूपता के लिए इस इमारत के पूर्वी और पश्चिमी किनारे पर एक तरह की दो मस्जिदें बनी हुई हैं।

ताजमहल एक चौकोर इमारत है जिसके चारों ओर और चारों कोनों पर एक-एक झिर्रीदार कोष्ठिका बनी हुई है। इस इमारत के शीर्ष पर खूबसूरत उभरे हुए गुम्बद हैं जिसके ऊपर उलटा कमल कलश और एक धातु निर्मित कलश अवस्थित है। चबूतरे के चारों कोनों पर चार वृत्ताकार मीनारें हैं जिनके शीर्ष पर स्तम्भयुक्त बुर्जियां हैं। अन्दर की ओर एक केन्द्रीय कक्ष हैं जिसके आसपास प्रकोष्ठ हैं, जो एक दूसरे से एक प्रकाशयुक्त गलियारे से जुड़े हुए हैं। मुख्य कक्ष की छत अर्द्धवृत गुंबदाकार है। यह दोहरे गुम्बद के अंदर का हिस्सा है। आयतों की नक्काशियों और पच्चीकारियों से बाहरी ओर का अलंकरण किया गया है और अंदर की ओर **पित्राड्यूरा** किया गया है। भवन-निर्माण के काम में लाया गया संगमरमर उच्च कोटि का है। इसे जोधपुर के निकट मकराना की खदान से लाया गया था। मुख्य इमारत के सामने की फुलवारी चार बराबर हिस्सों में विभक्त है। दो नहरें इन्हें चार हिस्सों में बाँटती हैं। मुख्य कक्ष में बनी स्मारक समाधि मूलतः सोने की नक्काशी की गयी जाली से घिरी हुई थी। परन्तु बाद में औरंगजब न इसे हटाकर संगमरमर की जाली लगवा दी।

ताज महल

बोध प्रश्न 3
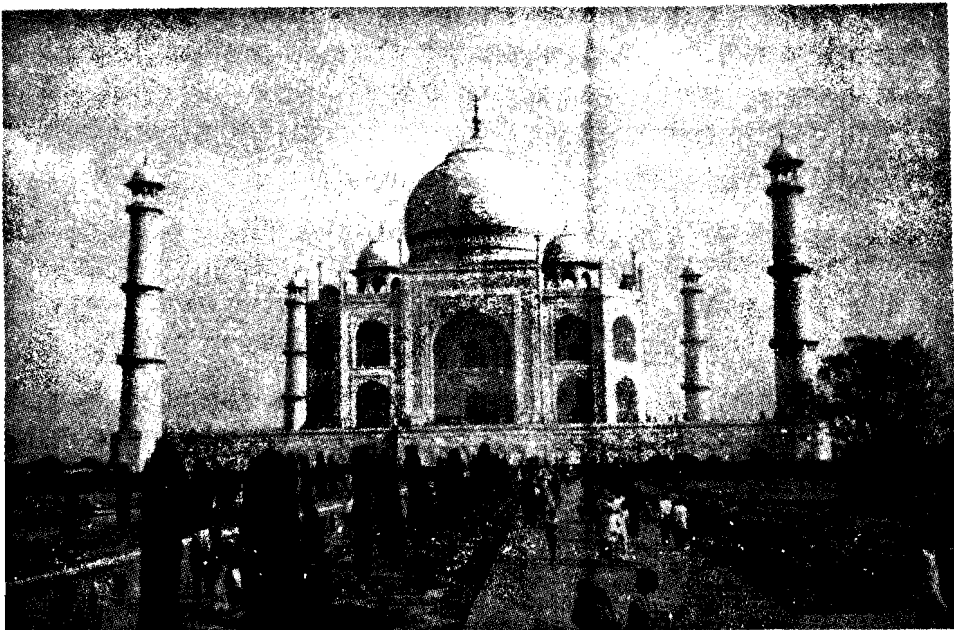
1) निम्नलिखित वक्तव्यों पर सही (✓) और गलत (×) का निशान लगाइए :
जहाँगीर तथा शाहजहाँ के काल के स्थापत्य की प्रमुख विशेषता थी :

i) भवन-निर्माण में लाल बलुए पत्थर के स्थान पर संगमरमर का प्रयोग होने लगा।

ii) मेहराबों में बहु-पत्तीदार वक्रता का उपयोग।

iii) इकहरे गुम्बद के स्थान पर दोहरे गुम्बद का उपयोग।

iv) पच्चीकारी का स्थान ज्यामितीय अंकन और उत्कृष्ट नक्काशी ने ले लिया।

v) पित्राडूयूरा का प्रयोग।

2) साठ शब्दों में ताजमहल के स्थापत्य पर टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

....

....

33.6 अंतिम चरण

यह भाग दो उपभागों में विभक्त है। पहले में औरंगजेब कालीन भवन निर्माण की गतिविधयों का उल्लेख किया गया है और दूसरे में औरंगजेब के शासनकाल के बाद के समय की वास्तुकला का जिक्र किया गया है।

33.6.1 औरंगजेब की इमारतें

अपने पिता के विपरीत औरंगजेब की स्थापत्य में कोई रुचि नहीं थी। उसके पूर्वजों ने कला को काफी बढ़ावा दिया परन्तु उसके शासनकाल में इन सब चीजों का महत्व काफी घट गया। पूर्ववर्ती मुगल शासकों की अपेक्षा औरंगजेब द्वारा बनाये गये भवन काफी कम हैं और इनका स्तर भी साधारण है। साम्राज्य की राजधानी दिल्ली में भी औरंगजेब के नाम से जुड़ी इमारतें कम ही हैं। औरंगजेब द्वारा बनवायी गयी इमारतों में औरंगाबाद स्थित उसकी बेगम रबियाउद्दौरान का मकबरा, लाहौर की बादशाही मस्जिद और लालकिला (दिल्ली) में बनी **मोती मस्जिद है**। आकार और बनावट में बादशाही मस्जिद दिल्ली की मस्जिद से मेल खाती है। इसमें एक बड़ा सभागार, खड़े होकर प्रार्थना करने का कक्ष और कक्ष के प्रत्येक कोने में मीनारें हैं।

उपासना स्थल के प्रत्येक कोण पर चार छोटी मीनारें हैं। उपासना कब्र के दोनों ओर एक खास अंतर पर मेहराबी प्रवेशद्वार है। इसमें केवल एक चँदोवा है। इमारत में ज्यादातर लाल बलुए पत्थर का प्रयोग किया गया है। कहीं-कहीं नाम मात्र के लिए संगमरमर का इस्तेमाल किया गया है। उपासना कब्र के ऊपर तीन उभरे हुए गुम्बद खुबसूरत लगते हैं।

लाल किला (दिल्ली) में स्थित **मोती मस्जिद** इस युग की दूसरी महत्वपूर्ण इमारत है। इस इमारत के निर्माण में उच्च कोटि का संगमरमर लगाया गया है। आगरा के किले में शाहजहां निर्मित **मोती मस्जिद** से यह मस्जिद मेल खाती है। यहां केवल वक्रता ज्यादा उभर कर सामने आयी है। उपासना कक्ष के ऊपर तीन उभरे हुए गुम्बद बने हुए हैं जो एक ही आकार की बुर्जी के रूप में बनाये गये हैं।

औरंगजेब की पत्नी के मकबरे में ताजमहल की नकल करने की कोशिश की गयी है। लेकिन औरंगजेब का स्थापत्य शिल्पी मकबरे के कोने पर सही ढंग से मीनारों को स्थापित नहीं कर पाया है जिसके कारण पूरे भवन का सामंजस्य बिखर गया है। ताजमहल की नकल करने की कोशिश असफल रही है। इसकी मीनारें पूरी संरचना से मेल नहीं खातीं।
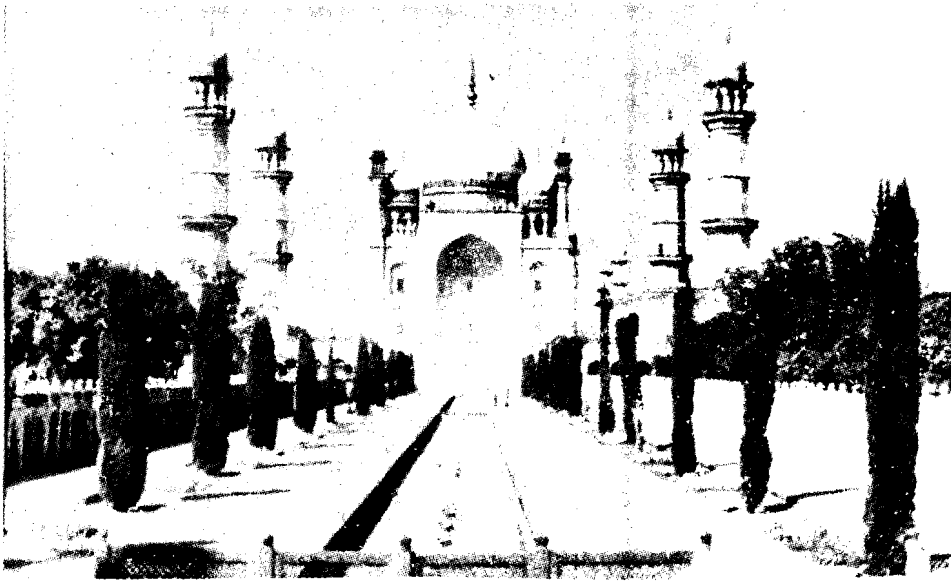
राबि उद दौरान का मकबरा

33.6.2 सफदर जंग का मकबरा

1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद साम्राज्य भरभरा कर गिर पड़ा। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बनी कुछ इमारतें इस पतन की गवाह हैं।

दिल्ली में स्थित सफदर जंग का मकबरा इस युग का सबसे महत्वपूर्ण भवन है। यह एक बड़े बाग से घिरा हुआ है और औरंगाबाद में बने रबियाउद्दौरान के मकबरे के समान यहां भी ताजमहल की नकल करने की कोशिश की गयी है। हालांकि इसके आकार प्रकार में बदलाव यह किया गया है कि इसकी मीनारें मुख्य भवन के हिस्से के रूप में ही निर्मित हैं। ये स्वतंत्र ढांचे नहीं हैं। मुख्य भवन छत्तेदार चबूतरे पर खड़ा है। इसमें दो मंजिले हैं और यह एक बड़े और लगभग गोलाकार गुबंद से आच्छादित है। ये मीनारें बुर्ज की तरह उठी हैं और इसके शीर्ष पर गुंबदनुमा छतरियां हैं। पूरा भवन लाल बलुए पत्थर से बना है जिसमें संगमरमर की पट्टी दी गयी है। मेहराबों का अग्रभाग कम वक्र है परन्तु यह पूरे भवन की समग्र संरचना से अच्छी तरह मेल करता है।
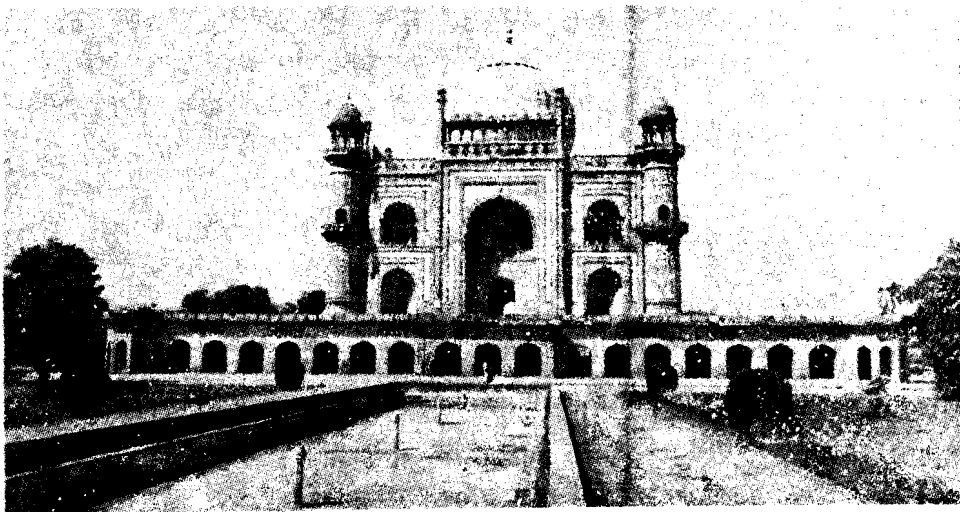
सफदर जंग का मकबरा

बोध प्रश्न 4

1) औरंगजेब के शासनकाल की स्थापत्यगत गतिविधियों पर विचार कीजिए।

....

....

....

....

....
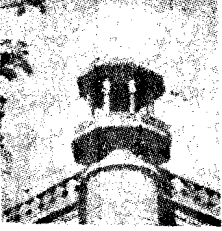
छतरी/बुर्जी

2) सफदर जगं के मकबरे पर लघु टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

....

33.7 सारांश

खंभे

बाबर और हुमायूं ज्यादातर अपनी राजनैतिक समस्याओं में उलझे रहे। इसलिए उन्हें भवन निर्माण का बहुत कम अवसर मिला। हालांकि बाबर खुद बगीचों का प्रेमी था और अपने छोटे से शासनकाल में उसने भारत में कई बागान लगवाए थे। मुगलों की स्थापत्यगत गतिविधियों की असल शुरुआत अकबर के समय से हुई। उसकी इमारतें मुख्य रूप से लाल बलुए पत्थर से निर्मित हैं। अकबर के भवनों में मेहराबों और शहतीर शैलियों का सुन्दर सम्मिश्रण है। जहांगीर स्थापत्य की अपेक्षा चित्रकला में ज्यादा रुचि रखता था। हालांकि चित्रकला में रुचि होने के कारण समकालीन स्थापत्य में नयापन आया। चित्रकारी, पशुओं और फूल-पत्तियों के डिजाइनों का अलंकरण के लिए इस्तेमाल होने लगा और **पित्राड्यूरा** नामक नयी अलंकरण शैली जहांगीर के समय सामने आयी। शाहजहां के शासनकाल में मुगल स्थापत्य अपने उत्कर्ष पर पहुंच गया और इस समय संगमरमर का उपयोग ज्यादातर होने लगा। शाहजहां द्वारा निर्मित सफेद संगमरमर में ढला ताजमहल एक अनुपम और अमर कृति है। इसकी दोहरी-गुम्बद, मीनारें, बहु-पत्तीदार मेहराबें, आदि स्थापत्य कला के चरम उत्कर्ष की गवाह हैं। उसका उत्तराधिकारी औरंगजेब भवन निर्माण गतिविधि के प्रति उदासीन था। इसलिए उसके शासनकाल में कम भवनों का निर्माण हुआ है। औरंगजेब के बाद का काल पतन का काल था। अव्यवस्थित राजनैतिक माहौल में स्थापत्य में रुचि लेना मुगल शासकों के वश में नहीं था। इस माहौल में बड़ी इमारतों का निर्माण नहीं हो सकता था। इस काल का एकमात्र स्मारक दिल्ली स्थित सफदर जंग का मकबरा है।

33.8 शब्दावली

शिखर

कोष्ठिका : गुंबदाकार झिरी

तोरण पथ : छतयुक्त मेहराबों की श्रृंखला

मेहराब : ईंटों या पत्थर के खंडों से बना अपने बल पर खड़ा ढांचा जिसके ऊपर कोई ढांचा खड़ा किया जाता है।

बावली : सीढ़ीनुमा कुंआ

ब्रैकेट : ताक दीवार का सहारा

स्मारक समाधि : किसी की याद में बनायी गयी इमारत

घुमावदार मेहराब : ऐसी मेहराब जो अंदर की ओर नोकदार हो।

स्तंभावलि : स्तंभों की एक पंक्ति

सेतुमार्ग : पानी के बीच बना रास्ता

बुर्जी : गुंबद का भीतरी भाग

गुम्बद : एक चौकोर के ऊपर बना उत्तल छत भवन में अष्टकोणीय या वृत्ताकार स्थान

छज्जा : छत का निकला हुआ बाहरी हिस्सा

रंगीन मेहराब : फूल-पत्तियों से अलंकृत मेहराब

कलश : शिखर

छतरी : एक खुली वीथी जिसकी छत स्तंभों के सहारे टिकी हुई हो

खंभे : पत्थर और ईंट को जोड़कर बनायी गयी संरचना जो क्षैतिज भार उठाये रखते हैं

पित्राड्यूरा : संगमरमर की खुदाई कर उसमें चमकीले पत्थरों को जड़ना और अलंकृत करना

चंदोवा : आगे का हिस्सा

गचकारी : चूने के प्लास्टर को खोदकर अलंकरण करना

शहतीर : इस स्थापत्य संरचना में कड़ी और स्तंभों का उपयोग किया जाता है

बुर्ज : भवन के साथ लगी मीनारें

चंदोवा

कोष्ठिका
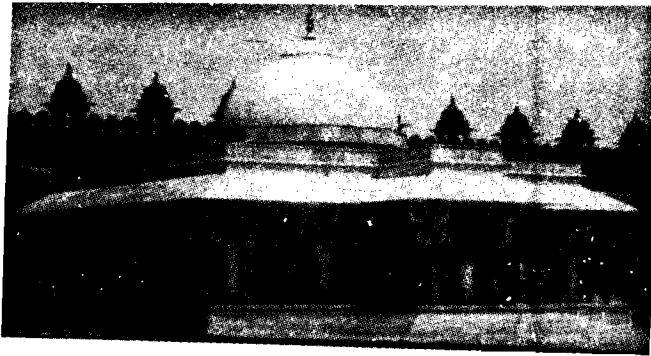
ब्रैकेट
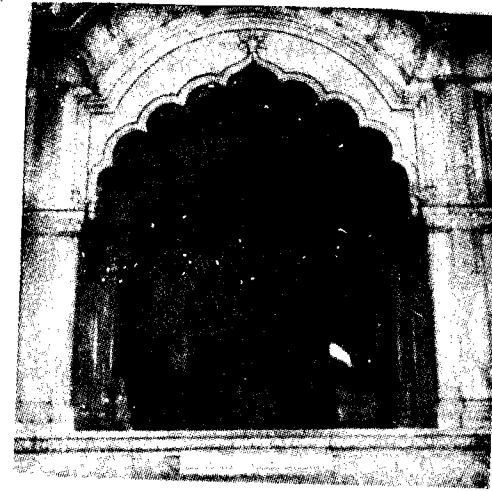
घुमावदार मेहराब (शाहजहाँ)
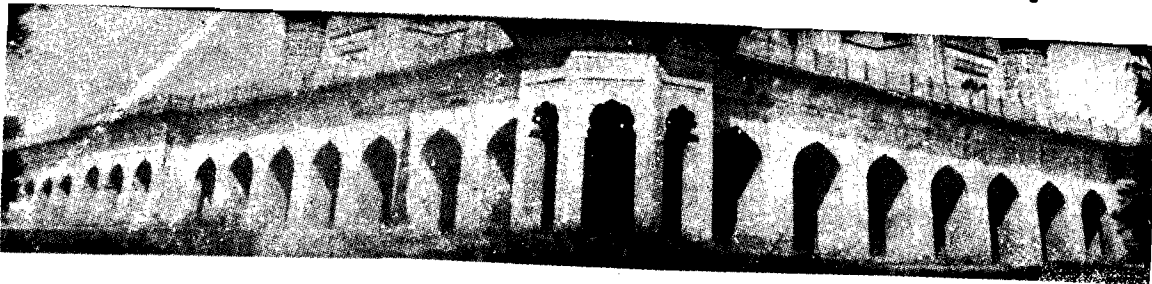
तोरण पथ

अकबरी मेहराब

गुम्बद

छज्जा
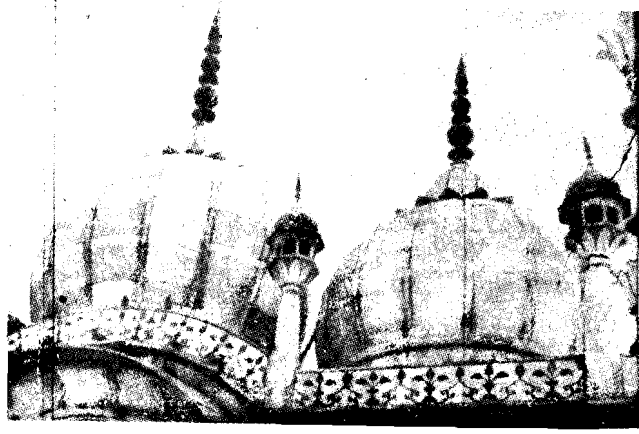
33.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) i) घ, ii) क, iii) ख, iv) ग

2) देखिए उपभाग 33.2.2

बोध प्रश्न 2

1 i) ×, ii) √, iii) √, iv) ×

2) देखिए उपभाग 33.4.2 फतेहपुर सीकरी में निर्मित अकबर के भवनों की आम विशेषताओं पर विचार कीजिए, जैसे शैली, निर्माण वस्तु, अलंकरण, नक्काशी आदि।

2) देखिए उपभाग 33.4.2

बोध प्रश्न 3

1) i) √ ii) √, iii) ×, iv) ×, v) √

2) देखिए उपभाग 33.5.2

बोध प्रश्न 4

1) देखिए उपभाग 33.6.1 इस तथ्य पर विचार कीजिए कि औरंगजेब भवन निर्माण में रुचि नहीं रखता था और उसके शासनकाल में कम भवनों का निर्माण हुआ। इन भवनों का वर्णन करते हुए इनकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

2) देखिए 33.6.2.